जीत की कहानी

मैं केवल दो साल की ~~थी~~ थी जब मेरे पिताजी की मृत्यु हो गई थी। अपने माता-पिता की इकलौती बेटी होने के कारण मेरी माँ ने ही मुझे बहुत लाड़-दुलार करके बड़ा किया था। लेकिन एक बात थी। हम गरीब थे। बहुत गरीब। इतना गरीब ~~कि~~ कि हमारे पास एक दिन की रोटी के भी पैसे नहीं थे। हम दोनो नागपुर की एक छोटी-सी बस्ती में रहते थे। एक छोटी-सी कच्ची झोंपड़ी में, जो बारिश में टपकता था। वहाँ पर बिजली, पानी, सुरक्षा, और धन जैसी उपलब्धियों की कमी थी। मुझे अभी भी याद है कि मैं ~~कैसे~~ रात को चाँद की रोशनी के सा' सहारे पढ़ती थी। हम रोज सुबह चार बजे के करीब उठकर पाँच किलोमीटर चलकर दूर की नदी से बड़े-से भारी मटकों में पानी भरकर घर लाते थे। उसी से काम चला लेते थे। ~~मेरे उस~~ मेरा वह घर

कचड़े की ढेरों के मध्य स्थित था। आज भी मुझे ~~कहाँ~~ वहाँ से आनेवाली ~~गंदी बदबू~~ गंदी ~~दुर्ग~~ दुरगंध याद है। वहाँ पर ढंग का शौचालय तक नहीं था।

मैं रोज़ स्कूल से लौटने के बाद माँ के साथ काम पर निकल जाती। वह शहर के अमीरों के घर पर सफाई करने जाती थी। वह मुझे भी साथ ले जाती थी। उन ~~बड़े~~ बड़े-बड़े घरों के बड़े-बड़े आदमी मुझे और माँ को ताने मारते थे। वे हमारे साथ भेदभाव करते थे और हमें 'गंदा' और ~~तुच्छ~~ तुच्छ ~~होने का पर~~ म कहते थे।

एक दिन मैं जब माँ के साथ काम पर थी, एक घर में मैंने एक बड़ा-सा पुस्तकालय देखा। इतनी सारी पुस्तकें एक साथ मैंने पहले कभी नहीं ~~देखी थी।~~ ~~देखी थी~~ देखी थी। मैंने जिज्ञासा के साथ उस पुस्तकालय से एक पुस्तक निकाला। मैं वह पढ़ने ही वाली थी कि

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തിരുത്തി, പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

अचानक एक बड़े बड़े हाथ ने मेरे छोटे हाथ को जोर से पकड़ लिया। एक आवाज़ मेरे कानों में गूँजी, "~~खबरदार! अगर मेरी~~ मेरे पुस्तकों को हाथ लगाने वाली तुम कौन होती हो? गंदी बच्ची! निकल यहाँ से! हट हट!" मैंने तुरंत पुस्तक को वहीं छोड़ दिया। मैं डर गई थी। मुझे क्रोध और लाज का अनुभव हुआ। "क्या मैं सच में इतनी गंदी हूँ?" मैंने सोचा।

उस दिन घर पहुँचने पर मैंने माँ को सारी बात बताई। मैं बिना रुके रोती जा रही थी। यह देखकर माँ ने उस दिन ~~मुझसे~~ मुझे एक बात ~~बात~~ बताई जो मुझे आज तक याद है- "बेटी, हम गरीब हैं। जिन अमीरों ने हमें काम करने बुलाया है, वे उन लोगों का मानना है कि हम ~~बिन~~ बिलकुल गंदे, छोटे और कमज़ोर हैं। इन पढ़े-लिखे लोगों के पास पैसा बहुत है। यही उनकी शक्ति है; जिसका दुरुपयोग करके वे हम जैसों का शोषण करते हैं। तुम अगर इन से जीतना चाहती हो तो

Item Code: 952 Participant Code: 036

तुम्हें बहुत मेहनत करनी होगी। चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आने ~~वाली~~ वाले संघर्ष झेलने पड़ेंगे। ~~जिस दिन तुम~~ ~~इन सब~~ संघर्ष के बाद एक दिन आएगा जब तुम भी ~~समाज में~~ सम्मानित औरत बन जाओगी। " तब तुम्हें कोई 'गंदी' या 'तुच्छ' नहीं ~~पुक~~ कहेगा। "

यह सुनकर मैंने ~~ए~~ तुरंत रोना बंद कर दिया। चाँद की रोशनी में उस रात मेरी आँखें ज़रा चमक उठीं - आँसुओं के कारण नहीं बल्कि एक नई ताकत की प्राप्ति के कारण।

उस ~~दिन~~ दिन ~~से~~ मेरे मन में एक तीव्र इच्छा पैदा हुई - कि मैं मेहनत करके अपनी माँ का नाम रौशन करूँगी। इसके साथ मैं रोज़ कमर कसकर पढ़ने लगी। सुबह पानी लाती थी, स्कूल जाती थी, ~~अ~~ वापिस लौटकर शाम तक काम करती थी और रात को पढ़ाई करती थी।

सब कुछ अच्छा चल रहा था कि अचानक एक दिन मेरी माँ बीमार हुई। उन्हें अस्पताल लेकर गई तो वहाँ वहाँ के डॉक्टरों ने माँ का इलाज करने से मना कर दिया। वे कह रहे थे कि माँ के मैले मैले वस्त्र के कारण अस्पताल का बिस्तर खराब हो जाएगा। इसलिए उन्होंने हमें बिना दवा दिए ही घर भेज दिया। उस रात मेरी माँ की हालत खराब होती ही गई और आखिर उन्होंने अपनी आखरी साँस ली। उससे पहले सिर मेरी गोद में रखकर बैठी हुई माँ ने हाँफते-काँपते हुए कहा - "बेटी, उन्हें कभी जीतने नहीं देना। तुम्हें कभी हार नहीं मानना है।"

तेरह वर्ष की उम्र में मैं अनाथ बन गई थी। इस बुरी दुनिया में मैं बिलकुल अकेली थी। अब अब मुझे मेरी ज़िन्दगी की लड़ाई अकेले लड़नी थी। मुझे उस समय उन अस्पतालवालों से जो घृणा हो रही थी, और माँ के वियोग से जो दुख

और दर्द का अनुभव हो रहा था, ~~मैंने उसे मेरे शिक्षक की आग का ईंधन बना~~ ~~मैंने लिया।~~ मैंने उसे मेरे सपने की आग का ईंधन बना लिया। मैंने उस दिन ठान लिया कि मैं एक वकील बनकर उन डॉक्टरों के खिलाफ़ मुकदमा करके बदला लूँगी।

उस दिन से मैंने काम और स्कूल दोनों पर ध्यान दिया और बहुत मेहनत करने लगी। ~~इस अनाथ~~ एक गरीब अनाथ से लेकर एक प्रसिद्ध वकील का सफर ~~बिल्कुल~~ बिलकुल भी आसान नहीं थी। ~~फिर~~ मुझे अक्सर अमीरों के हाथों से ताने सुनने पड़े थे। ~~और थी~~। परीक्षाओं में असफल भी रही थी। लेकिन मेरी माँ की यादें ने मुझे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने की ताकत दी।

इस घटना के घटित होने के बाद बहुत वर्ष बीत चुके हैं। आज मैं संपूर्ण अभिमान और आत्मविश्वास के साथ

कह सकती हूँ कि मैं केवल नागपुर की ही नहीं बल्कि पूरे राज्य की सबसे प्रसिद्ध और अमीर वकील बन गई हूँ। ~~जिस~~ जो अस्पताल मेरी माँ की मृत्यु का कारण था, मैंने उसके ~~ख~~ डॉक्टरों के खिलाफ़ मुकदमा किया और जीत गई। मेरा ~~बा~~ बदला पूरा हुआ। ~~और~~ जिन ~~लोग~~ लोगों ने माँ और मेरी बेइज्जती की थी, वे आज मेरा सम्मान और आदर करते हैं।

मेरी ज़िंदगी ~~संघा~~ संघर्ष से भरी थी और रहेगी। लेकिन मैं ~~संघर्षा~~ इन संघर्षों ~~का सामना~~ सम्मुख आने पर ~~कभी~~ ~~मैं~~ कभी भी पीछे ~~मुड़~~ मुड़कर न नहीं भागी थी और आज भागूगी भी नहीं, क्योंकि हारना मेरे लिए मंजूर नहीं।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).